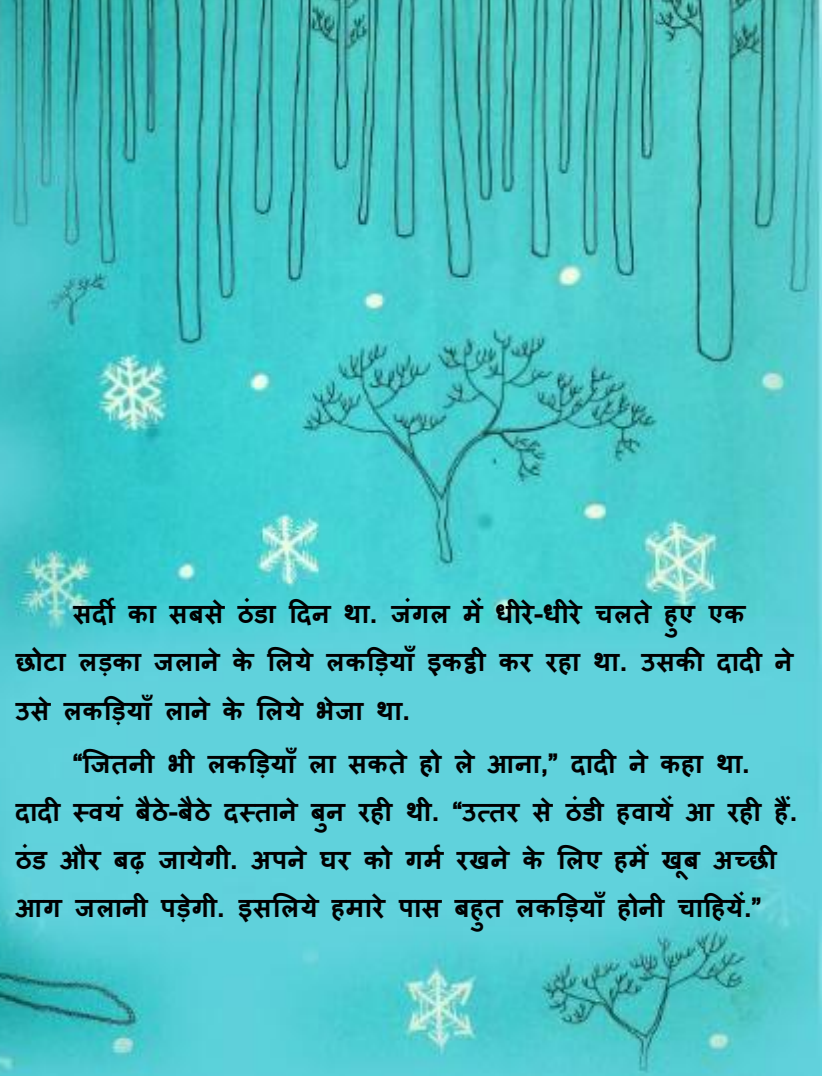


# दस्ताना

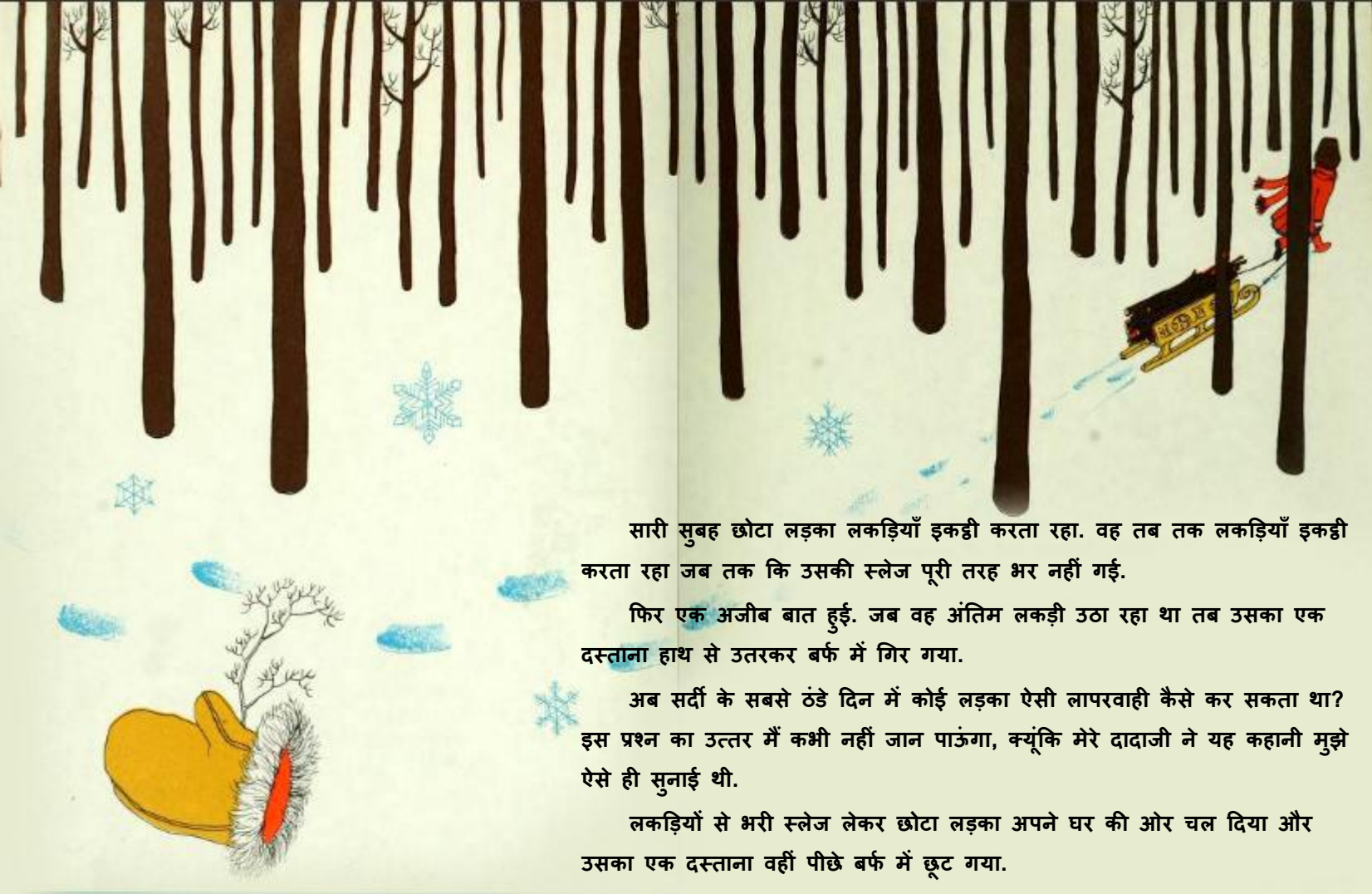
एक यूक्रेनी लोककथा





सर्दी का सबसे ठंडा दिन था. जंगल में धीरे-धीरे चलते हुए एक छोटा लड़का जलाने के लिये लकड़ियाँ इकट्ठी कर रहा था. उसकी दादी ने उसे लकड़ियाँ लाने के लिये भेजा था.

“जितनी भी लकड़ियाँ ला सकते हो ले आना,” दादी ने कहा था. दादी स्वयं बैठे-बैठे दस्ताने बुन रही थी. “उत्तर से ठंडी हवायें आ रही हैं. ठंड और बढ़ जायेगी. अपने घर को गर्म रखने के लिए हमें खूब अच्छी आग जलानी पड़ेगी. इसलिये हमारे पास बहुत लकड़ियाँ होनी चाहियें.”



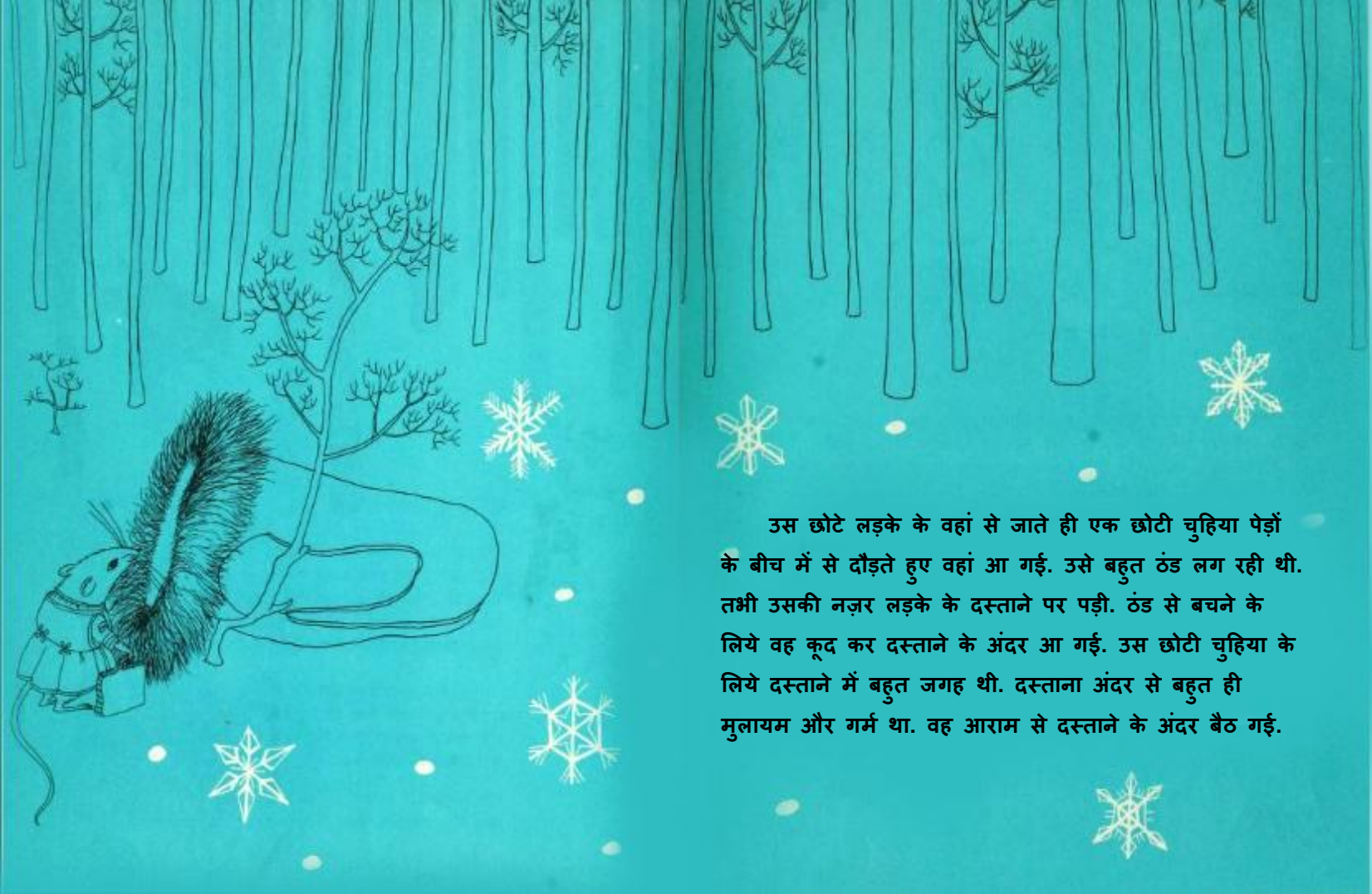
सारी सुबह छोटा लड़का लकड़ियाँ इकट्ठी करता रहा. वह तब तक लकड़ियाँ इकट्ठी करता रहा जब तक कि उसकी स्लेज पूरी तरह भर नहीं गई.

फिर एक अजीब बात हुई. जब वह अंतिम लकड़ी उठा रहा था तब उसका एक दस्ताना हाथ से उतरकर बर्फ में गिर गया.

अब सर्दी के सबसे ठंडे दिन में कोई लड़का ऐसी लापरवाही कैसे कर सकता था? इस प्रश्न का उत्तर मैं कभी नहीं जान पाऊंगा, क्योंकि मेरे दादाजी ने यह कहानी मुझे ऐसे ही सुनाई थी.

लकड़ियों से भरी स्लेज लेकर छोटा लड़का अपने घर की ओर चल दिया और उसका एक दस्ताना वहीं पीछे बर्फ में छूट गया.





उस छोटे लड़के के वहां से जाते ही एक छोटी चुहिया पेड़ों के बीच में से दौड़ते हुए वहां आ गई. उसे बहुत ठंड लग रही थी. तभी उसकी नज़र लड़के के दस्ताने पर पड़ी. ठंड से बचने के लिये वह कूद कर दस्ताने के अंदर आ गई. उस छोटी चुहिया के लिये दस्ताने में बहुत जगह थी. दस्ताना अंदर से बहुत ही मुलायम और गर्म था. वह आराम से दस्ताने के अंदर बैठ गई.

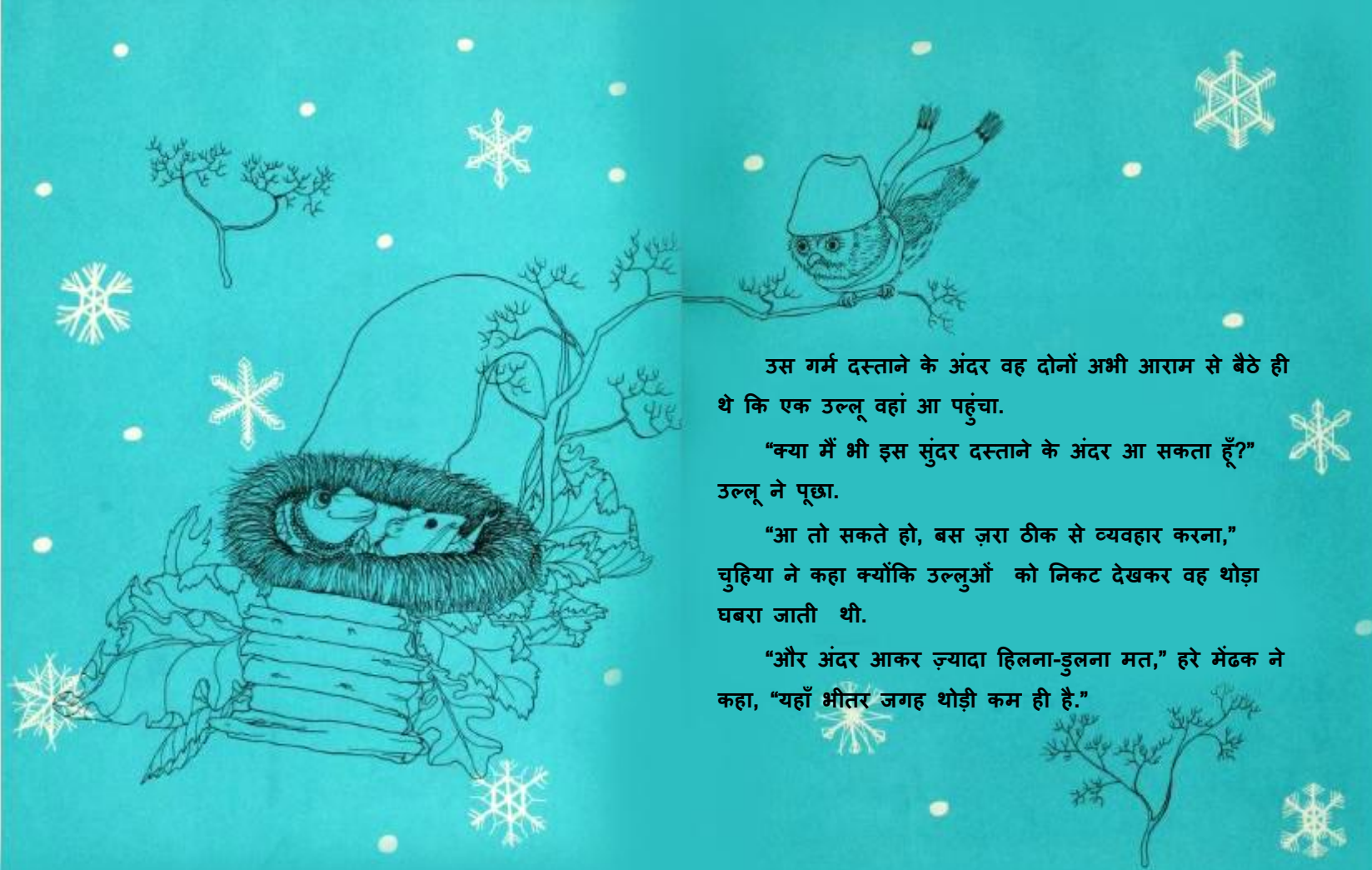


तभी हरा मेंढक बर्फ पर फुदकता हुआ आ पहुंचा.

“कोई अंदर है?” उसने दस्ताने के पास आकर पूछा.

“सिर्फ मैं ही हूँ,” चुहिया ने कहा, “और इस के पहले कि तुम इस ठंड में जम जाओ, झटपट भीतर आ जाओ.”





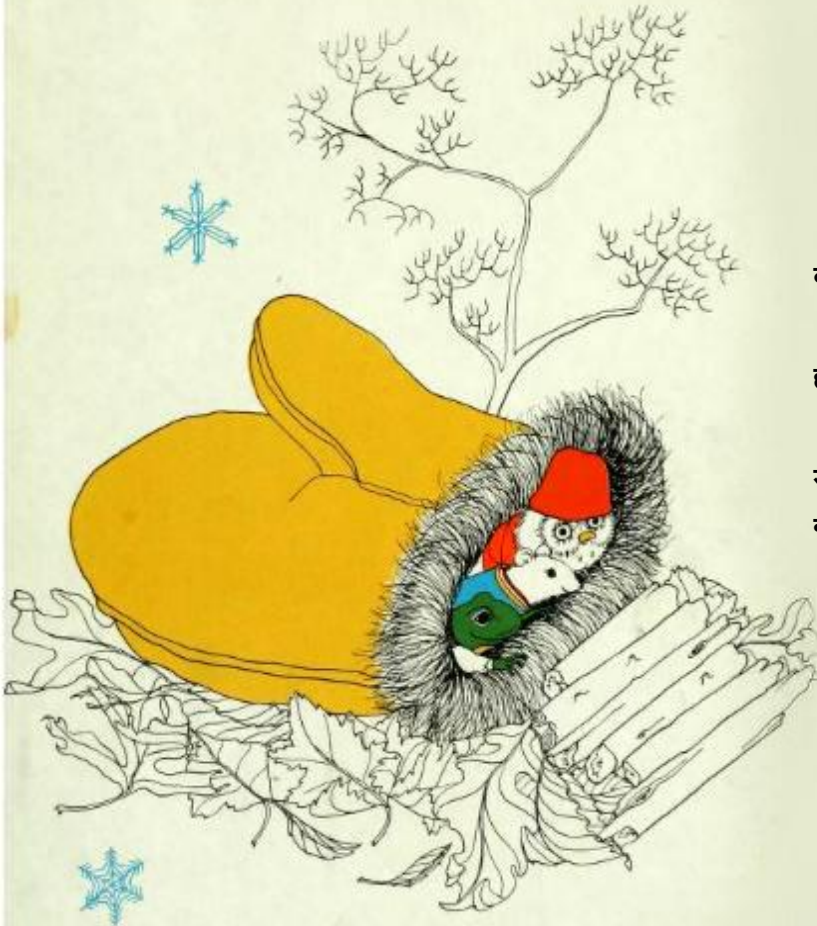
उस गर्म दस्ताने के अंदर वह दोनों अभी आराम से बैठे ही थे कि एक उल्लू वहां आ पहुंचा.

“क्या मैं भी इस सुंदर दस्ताने के अंदर आ सकता हूँ?”  
उल्लू ने पूछा.

“आ तो सकते हो, बस ज़रा ठीक से व्यवहार करना,”  
चुहिया ने कहा क्योंकि उल्लुओं को निकट देखकर वह थोड़ा  
घबरा जाती थी.

“और अंदर आकर ज़्यादा हिलना-डुलना मत,” हरे मेंढक ने  
कहा, “यहाँ भीतर जगह थोड़ी कम ही है.”





थोड़ा समय ही बीता कि एक खरगोश जंगल के रास्ते चलता-चलता वहां आया.

“इस बढ़िया गर्म दस्ताने के अंदर क्या मेरे लिये थोड़ी सी जगह होगी?” खरगोश ने पूछा, “बाहर आज बहुत ही ज़्यादा ठंड है.”

“अब ज़्यादा जगह तो नहीं बची,” चुहिया, मेंढक और उल्लू ने एक साथ कहा, “लेकिन तुम अंदर आ जाओ, देखते हैं कि हम तुम्हारे लिये क्या कर सकते हैं.”





खरगोश दस्ताने के अंदर घुसा ही था कि एक लोमड़ी जल्दी-जल्दी वहां आई और बहुत परिश्रम के बाद वह भी दस्ताने के भीतर आ गई.

अब चुहिया सोचने लगी कि उसे इतना दयालु नहीं होना चाहिए था. लेकिन वह कर भी क्या सकती थी? बाहर बहुत ठंड थी और ऐसे में दूसरों की थोड़ी सहायता तो उसे करनी ही थी.

बड़ी कठिनाई के साथ सब उस दस्ताने में बैठे ही थे कि बड़ा भूरा भेड़िया भी आ धमका. सर्दी से बचने के लिये वह भी दस्ताने के अंदर आना चाहता था.

“मुझे समझ नहीं आ रहा कि हम सब इस दस्ताने में कैसे बैठ पायेंगे?” चुहिया ने कहा, “लेकिन फिर भी हम कोशिश तो कर ही सकते हैं.”





सब थोड़ा इधर-उधर हिले, आगे-पीछे सरके, दायें-बायें  
खिसके और बहुत कोशिश के बाद भेड़िया भी अंदर आ गया.

अब अंदर खूब भीड़ हो गई थी. लेकिन कम-से-कम  
अंदर ठंड न थी. दस्ताने के अंदर अच्छी गर्मी थी.





जैसे ही सब ठीक-ठाक आराम से दस्ताने में बैठे वैसे ही किसी के फुफकारने की आवाज़ सुनाई दी. बाहर एक जंगली सूअर था. वह भी सर्दी से बचने के लिये अंदर आना चाहता था.

“हे भगवाना!” चुहिया चिल्लाई क्योंकि दस्ताना पहले ही फैल चुका था, “अब तो अंदर ज़रा सी भी जगह नहीं है.”



“घबराओ मत, अंदर आते समय में पूरा ध्यान रखूँगा,” सूअर ने कहा. इतना कह, वह किसी तरह अंदर आ ही गया. फिर चुहिया और मेंढक और उल्लू और खरगोश और लोमड़ी और भेड़िये के साथ सिकुड़कर वह भी बैठ गया. मुझे यह सारी बातें इसलिये पता हैं क्योंकि मेरे दादाजी ने मुझे यह सब बातें बताई थीं.







“क्या मूर्खों जैसी बातें करते हो?” भालू ने थोड़ा ऊंची आवाज़ में कहा, “क्या तुम ने वह कहावत नहीं सुनी कि एक अतिरिक्त प्राणी के लिये तो हमेशा थोड़ी सी जगह बची ही रहती है।”

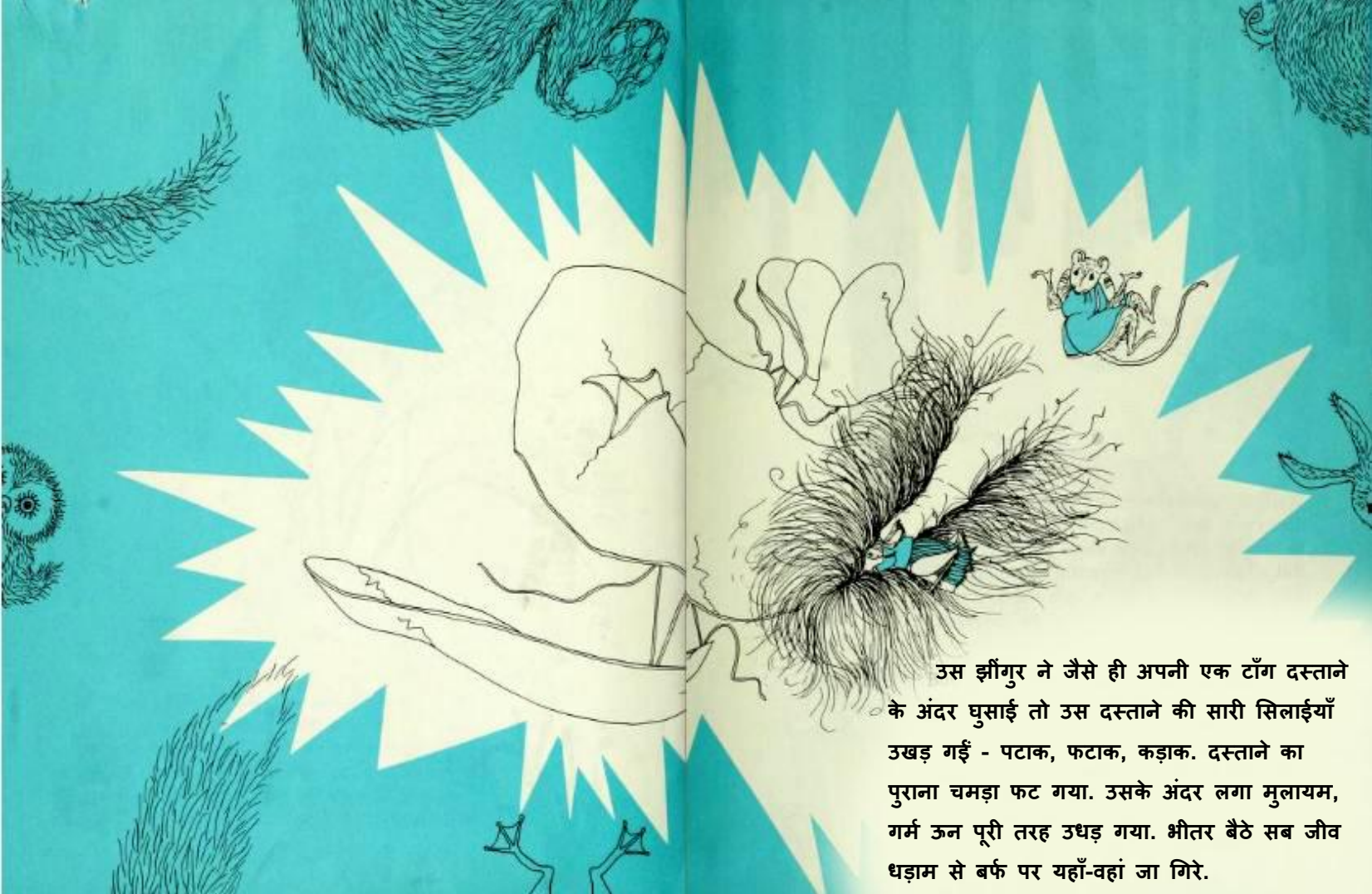
और बिना कोई अनुरोध किये, भालू रेंगते हुए दस्ताने के अंदर आने लगा. पहले उसने अपना एक पंजा दस्ताने के अंदर रखा. दस्ताना थोड़ा सा कड़कड़ाया. फिर उसने अपना दूसरा पंजा अंदर डाला. दस्ताने की सिलाई थोड़ी सी चटक गई. फिर उसने एक गहरी सांस ली और दस्ताने के अंदर घुस आया.



अब जिस समय भालू दस्ताने के अंदर घुसने की कोशिश कर रहा था उसी समय एक छोटा सा काला झींगुर भी वहां आ गया. झींगुर बहुत बूढ़ा था और उसकी टेढ़ी-मेढ़ी टाँगों में ठंड से दर्द हो रहा था. दस्ताना देखकर उसने अपने आप से कहा, “अरे, यह तो बड़ी आरामदायक जगह है. इसके भीतर तो ठंड भी नहीं लगेगी. मैं फुदककर इसके अंदर चला जाऊँगा और सिमटकर कहीं बैठ जाऊँगा.”







उस झींगुर ने जैसे ही अपनी एक टाँग दस्ताने के अंदर घुसाई तो उस दस्ताने की सारी सिलाईयाँ उखड़ गईं - पटाक, फटाक, कड़ाक. दस्ताने का पुराना चमड़ा फट गया. उसके अंदर लगा मुलायम, गर्म ऊन पूरी तरह उधड़ गया. भीतर बैठे सब जीव धड़ाम से बर्फ पर यहाँ-वहाँ जा गिरे.







और मेरे दादाजी कहते हैं कि उन्हें कभी पता ही नहीं  
चला कि उनके दस्ताने के साथ सच में क्या हुआ.

